IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, September 2022
Impact Factor: 6.252

न्यायदर्शन : महर्षि पतंजलि

डॉ. अनामिका चतुर्वेदी
अतिथि विद्वान् (संस्कृत साहित्य),
शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

शोध–सारांश :–

आस्तिक दर्शनों में दुःखत्रय की आत्यन्तिक निवृत्ति के उपायों पर गहनता से विचार किया गया है, दुःखत्रय की आत्यन्तिक निवृत्ति का मार्ग प्रशस्त करने वाला यह अनुपम दर्शन है। शोध–पत्र में योगदर्शन के महत्व को बताने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्दः योगदर्शन, महर्षि, पतंजलि, दुःखत्रय, आत्यन्तिक, उपनिषद् आदि।

संदर्भ स्रोत :

[1]. पाणिनि धतुपाठ, पाणिनि पञ्चकम् दिवादिगण, दिल्ली संस्कृत एकादमी, पृ. सं. 144
[2]. श्रीमद्भगवद्गीता 6/23 गीताप्रेस गोरखपुर
[3]. पातञ्जलयोगदर्शन, व्यासभाष्य भूमिका, डॉ.सुरेशचन्द्रश्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती, पृ॰सं॰3
[4]. श्रीमद्भगवद्गीता 5/4 गीताप्रेस गोरखपुर
[5]. श्रीमद्भगवद्गीता 5/4 गीताप्रेस गोरखपुर
[6]. पातञ्जल योगदर्शन, व्यासभाष्यभूमिका, पृ. सं.18
[7]. पातञ्जल योगदर्शन, व्यासभाष्यभूमिका, पृ. सं.16
[8]. श्रीमद्भगवद्गीता 6/35 गीताप्रेस गोरखपुर,
[9]. पातञ्जल योगदर्शन 1/12 व्यासभाष्य डॉ.सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव चौखम्बा सुरभारती,पृ.सं.80
[10]. पातञ्जल योगदर्शन 1/24 व्यासभाष्य डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव चौखम्बा सुरभारती,पृ.सं.50
[11]. ईशादि नौ उपनिषद्, मुण्डकोपनिषद् 2/2/7 गीताप्रेस गोरखपुर, पृ. सं.235
[12]. पातञ्जल योगदर्शन 1/16 व्यासभाष्य डॉ.सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव चौखम्बा सुरभारती, पृ.सं.211